- भारतीय भाषा शिक्षण और आदिवासी भाषाओं के मातृभाषा शिक्षण के रूप में प्रयोग की चुनौतियाँ और समाधान।
- भारतीय मातृभाषा-शिक्षण और आदिवासी भाषाओं के संरक्षण और विकास की समस्याएँ।

पत्रों का आमंत्रण

. ये विषय ही अन्तिम नहीं है इसलिए इससे संबंधित प्रासंगिक विषयों पर आलेखों का स्वागत है।

अत: 250-300 शब्दों में सार और 2500-3000 शब्दों में पत्र या तो हिंदी या अंग्रेजी में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। अन्य भारतीय भाषाओं मं भी प्रस्तुति संभव है यदि अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गए आलेखों का अनुवाद हिंदी या अंग्रेज़ी में पूर्व प्रेषित कर दिया जाय। चयनित आलेखों को सम्मेलन की कार्रवाई के रूप में संपादित और प्रकाशित किया जा सकता है। सम्मेलन के लिए सार को 29 फरवरी, 2020 तक और संपूर्ण पत्र को 09 मार्च, 2020 तक भेजा जा सकता है।

सम्मेलन के लिए चयनित पत्रों का प्रस्तुतीकरण और चर्चा विषय विशेषज्ञों के समूहों के निर्धारण के द्वारा किया जाएगा। सम्मेलन अकादमिक समिति के पास अधिकार होगा कि वह पत्रों को प्लेनरी सत्र या समानांतर वाले सत्र में कहीं भी प्रस्तुत करने के लिए नियत करे।

- Preparation and training of teacher's of Indian mother tongues and tribal languages.
- Challenges and solutions for Indian languages teaching and use of tribal languages mother tongue teaching.
- Problems of teaching of Indian mother tongue and protection and development of tribal languages.

Invitation of papers

These topics are not complete, so paper's on relevant topics related to this are welcome

So abstracts in 250-300 words and paper in 2500-3000 words can be presented in either Hindi or English. Presentation in other Indian languages is also possibles if the translation of papers written in other Indian languages is already send to Hindi or English. Selected paper can also be edited and published as a conference report. The abstract may be sent till **February 29, 2020** and full papers may be sent till **March 09, 2020**.

Presentation of the selected paper for the conference will be decided by a group of subject experts. The conference academic committee

पत्र प्रस्तुति की प्रक्रिया

प्रतिभागियों को उनके पत्र के चयनित होने के संबंध में कार्यक्रम समन्वयक द्वारा टेलीफोन, ई-मेल से सूचित किया जाएगा।

पत्रों की सॉफ्ट व हार्ड दोनों कापियाँ यथासंभव शीघ्र कार्यक्रम समन्वयक को भेजनी होगी। ऐसा न करने पर अकादमिक सलाहकार समिति को यह अधिकार होगा कि ऐसे किसी भी पत्र को सम्मेलन में सम्मिलित करने के बारे में समुचित निर्णय ले।

सम्मेलन के लिए आमंत्रित सभी सहभागियों को **29 मार्च, 2020** को प्रात: 9:30 बजे सम्मेलन के लिए पंजीकरण कराना होगा। इसके लिए कोई पंजीकरण शुल्क नहीं लिया जाएगा।

प्रतिभागियों को कम से कम दूरी वाले मार्ग द्वारा एसी 3 टियर तक का किराया यात्रा सहायता राशि दी जायेगी। एन.सी.ई.आर.टी. के नियमानुसार मूल टिकट जमा करने पर सीधे प्रतिभागियों के खाते में राशि के हस्तांतरण के माध्यम से प्रतिपूर्ति की जायेगी। बोर्डिंग की सुविधा एन.सी.ई.आर.टी. अतिथि गृह में साझा करने के आधार पर उपलब्ध है।

will have the right to designate the paper s to be presented anywhere in the plenary session or parallel session.

Process of paper presentation

Participants will be informed by the programme co-ordinator by the telephone/e-mail regarding the selection of their papers. Both soft and hard copies of the papers have to be sent to the programme co-ordinator till **March 09, 2020**. On not doing so, the committee shall have right to take appropriate decisions in respect of inclusions of any such paper in the conference. All the participants invited for the conference will have to register for the conference on 29 March 2020 at 9:30a.m. No registration fee will be charged for this.

The participants will be provided with fare travels assistance amount upto AC 3 tier by the shortest distance route. Reimbursement will be reimbursed through transfer of fund directly to the participants accounts as per rules of NCERT. Boarding facility is available on sharing basis in the guest house of NCERT.

संरक्षक

प्रोफ़ेसर (डॉ.) हृषिकेश सेनापति
निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-16

अध्यक्ष

प्रोफ़ेसर (डॉ.) संध्या सिंह
विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-16

सम्पर्क

प्रो. (डॉ.) संजय कुमार सुमन
कार्यक्रम समन्वयक
भाषा शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-16
दूरभाष- 011-26565336 एक्सटेंशन-255 (कार्यालय)
मोबाइल- 09871445139
फैक्स- 011-26962873
ई-मेल- aadivasieducation@gmail.com

Patron

Prof. (Dr.) Hrushikesh Senapaty
Director, NCERT, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016

Chairperson

Prof. (Dr.) Sandhya Singh
Head of the Department
Department of Education in Languages
NCERT, Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016

Contact

Prof. (Dr.) Sanjay Kumar Suman
Programme Coordinator
Department of Education in Languages
NCERT, Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016
Ph- 011-265265336, Ext.-255 (O)
Mobile - 09871445139
Fax- 011-26962873
Email-aadivasieducation@gmail.com

"भारतीय भाषा शिक्षण और आदिवासी बच्चों की शिक्षा तथा शिक्षा के माध्यम का प्रश्न पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन"

"Two days- National conference on teaching of Indian languages and education of tribal children and the question of medium of instruction"

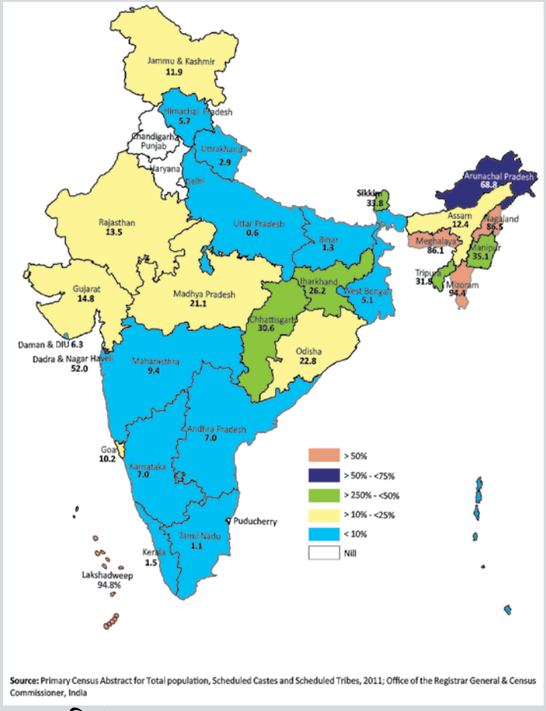

Source: Primary Census Abstract for Total population, Scheduled Castes and Scheduled Tribes, 2011; Office of the Registrar General & Census Commissioner, India

दिनांक Date	स्थान Venue
29-30 March, 2020	NCERT, NIE, New Delhi

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

सम्मेलन के बारे में

भारत अनेक विविधताओं के साथ-साथ भाषिक विविधताओं वाले नागरिक समूहों का देश है। इसमें 2011 की जनगणना के अनुसार आदिवासियों की आबादी 10.43 करोड़ है जो कि देश का 8.6% आबादी वाला समूह है। दुर्भाग्य से यह आबादी आर्थिक रूप से अत्यंत कमज़ोर और हाशिए पर खड़ा समूह है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा आदिवासी आबादी वाला देश है मगर आदिवासी समूहों तक शिक्षा की पहुँच संतोषप्रद नहीं है। यह आबादी समूह भौगोलिक और सामाजिक रूप से अलग-अलग रहने को विवश है और विकास के मापदंडों से दूर आर्थिक रूप से कमजोर भी है। हालांकि इनके आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्तर को सुधारने और बढ़ाने के क्रम में आश्रम विद्यालय की योजना, कोठारी और शिक्षा आयोगों के प्रस्तावों पर आधारित कार्यक्रमों से वृद्धि तो देखी जा सकती है, मगर शिक्षा के क्षेत्रों में इनका विकास अनुसूचित जाति समूहों के स्तर से भी कम है। आदिवासी समूहों का लगभग एक चौथाई समूह तो भीषण गरीबी की जिंदगी जीने को मजबूर है।

इस स्थिति में आदिवासी समूहों में स्त्री सशक्तिकरण तो प्रभावित होता ही है और सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं शारीरिक विकास में भी बाधाएँ आती है। इससे समूचे आदिवासी समुदाय में मानव संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है। इसके साथ ही इनकी भाषा, संस्कृति समेत पारंपरिक ज्ञान के स्रोत भी खतरों से गुजरने को विवश है। कई शोधों से यह पता चलता है कि इन स्थितियों के लिए सही और सुचारू रूप से इनकी मातृभाषाओं में शिक्षण सुविधाओं का नहीं होना भी एक जिम्मेवार कारक है। इससे आदिवासी भाषा-भाषियों की मातृभाषाओं में शिक्षण को भी प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाता है। दुर्भाग्य से भारतीय भाषा शिक्षण योजना में अभी तक भाषिक विविधताओं या बहुभाषिकता को राष्ट्रीय संसाधन मानकर राष्ट्रीय एकता को कायम करने के संकल्प में कुछ प्रबल भाषाओं को ही विशेष अधिकार प्राप्त है वहीं आदिवासी भाषाओं को समुचित संवैधानिक अधिकार मात्र पर ही संतोष कर अपने कम उपयोगी, अनुपयोगी और मृतप्राय: होने की स्थिति को ही झेलना पड़ रहा है।

प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षण को बढ़ावा देने के निर्णायक भूमिका से दुनिया के देशों में अच्छे परिणाम देखे जा सकते हैं। इससे मातृभाषा शिक्षा समेत शिक्षा के सभी पहलुओं का संवर्धन संभव है और बहुभाषी शिक्षण योजना के सफल क्रियान्वयन के साथ-साथ भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन का मार्ग भी मजबूत होता है। यही नहीं, यह भी देखा गया है कि इससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संप्राप्ति को भी बल मिलता है।

हम जानते हैं कि शिक्षा को विकास की गति को बढ़ाने वाला और मानवीय समाज मे तीव्र गति से परिवर्तन लाने वाला महत्वपूर्ण घटक भी माना जाता है। वास्तव में शिक्षा सिर्फ आर्थिक विकास ही नहीं बल्कि स्वाभिमान और मानवीय कौशल को बढ़ानेवाला महत्वपूर्ण कारक भी माना जाता है, जो शिक्षा ग्रहणकर्त्ता समूह में नयी चुनौतियों से सामना करने का सामर्थ्य भी बढ़ाता है। यह एक मानवीय, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक क्रियाकलाप या क्रियाकलापों की श्रृंखला के समान है जिससे त्वरित तौर पर मानवीय जीवन स्तर को समृद्ध किया जा सकता है और भविष्य के जीवन स्तर को बढ़ाने और सँवारने की क्षमता को बढ़ावा भी देता है। इसलिए आदिवासी बच्चों की शिक्षा ही एक मात्र साधन है जिसके द्वारा उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षमता का संवर्धन हो सकता है और उनमें विकास की गति को तीव्र किया जा सकता है। अत: आदिवासी आबादी समूहो के कठिनाइयों का निवारण और उनके भविष्य निर्माण के अवसरों को सतत बढ़ाने वाले संसाधन के रूप में उनके बच्चों की शिक्षा पर समुचित ध्यान दिए जाने की आज अनिवार्य आवश्यकता है। इससे उनके बीच लैंगिक और शैक्षणिक असमानताओं को भी दूर किया जा सकता है।

इसी को ध्यान में रखकर ही "भारतीय भाषा शिक्षण और आदिवासी बच्चों की शिक्षा तथा शिक्षा के माध्यम का प्रश्न" विषय पर यह दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

विषय-वस्तु

सम्मेलन में जो मुख्य विषय/मुद्दे उठाए जाएँगे वे इस प्रकार हैं।

- भारतीय भाषा शिक्षण और आदिवासी भाषाओं को मातृभाषा के रूप में शिक्षण की अवधारणा: प्रचलन और प्रयोग।
- भारतीय मातृभाषाएँ और आदिवासी भाषाओं की शिक्षण विधि।
- भारतीय मातृभाषाओं और आदिवासी भाषाओं की पाठ्यचर्या की आवश्यकता।
- भारतीय मातृभाषाएँ और आदिवाासी भाषाओं को मातृभाषा के रूप में शिक्षण से संबंधित सामग्री का विकास व प्रयोग।
- भारतीय मातृभाषाएँ और आदिवासी भाषाओं के शिक्षकों को तैयार करना और उनके प्रशिक्षण का सवाल।

About the Conference

India is country of civic groups with many variations as well as linguistic variations. According to the census of 2011, the population of tribal is 10.43 crore which is a group with 8.6% population of the country. Unfortunately, this population is an economically weak and marginalized group. India is country with the largest tribal population in the world; but access to education to tribal groups is not satisfactory. This population group is constrained to remain geographically and socially isolated and is also economically weak from the parameters of developments. Although in order to further improve their economic, social and educational levels, growth can be seen from the programmes based on the plans of Ashram schools, Kothari and other education commissions proposals, but their development in the fields of education from the level of scheduled caste groups is also low. About a quarter of the tribal groups are forced to live a life of severe poverty.

In this situation, women empowerment is affected in tribal groups, there are also obstacles in Social, Political, Economic and Physical development. Due to this, human resources are not utilized properly in the entire tribal, alongwith this, the source of traditional knowledge including language, culture is also constrained by dangers.

Many researchers show that the lack of teaching facilities in mother tongues is also a responsible factor for these conditions. Representation is not found even in the mother tongues of tribal languages. Unfortunately, in the language education scheme, yet only some strong languages have exclusive rights in resolving national unity by considering linguistics variations or multilingualism as a national resource, while tribal languages are satisfied only with proper constitutional rights and their less useful, useless and the situation of being dead has to be faced. Good result can be seen in the countries of the world by the desire role of promoting teaching in mother tongue at the initial level. With this, it is possible to promote all aspects of education including mother tongue education and along with the successful implementation of multilingual teaching scheme, it is also support the way for the preservation and promotion of language and culture. Not only this, it has also been seen that it also gives impacts to the attainment of quality education. We know that education is also considered to be an important factor in accelerating the pace of development and fringing about rapid changes in human society, infact, education is not only an economic development but is also considered an important factor in enhancing self-respect and human skills, which also increases the ability to face new challenges in the group of educators. It is similar to a series of human, social, national and global activities that can quickly enrich human living standards and also promote the ability to raise and improve living standards of the future. Therefore, education of tribal children is the only means through which their social, economic and political potential can be enhanced and the pace of development can be intensified.

Therefore, there is an imperative need to pay proper attention to the education of there children as a resource for the prevention of difficulties of tribal population groups and to increase their opportunities for future construction. This will take them apart and educational inequalities can also be removed. Keeping this in mind, this two day national conference is being organized on the subject of "Teaching of Indian language and education of tribal children and the question of medium of instruction".

Theme

The main topics/ issues that have been put-up for discussion in the conference are:

- Concept, practice and use of Indian language teaching and teaching of tribal languages as mother tongue.
- Indian languages and tribal languages teaching methods.
- Curriculum requirement of Indian mother tongues and tribal languages
- Development of and use of materials related to teaching Indian mother tongues and tribal languages as mother tongue.